Inspira-Journal of Commerce, Economics & Computer Science (JCECS)
(A National bi-lingual Quarterly Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal)
ISSN : 2395-7069(Print), Impact Factor: (Cosmos 7.650 & I2OR 5.120), Volume 12, No. 04, October-December, 2026, pp. 80-88

राजगीर में पर्यटन विकास के सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का अध्ययनः स्थानीय समुदायों के लिए अवसर एवं चुनौतियाँ

गुड्डी कुमारी[1*] एवं डॉ. शोभा रानी[2]

[1]शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार।
[2]सहायक प्राध्यापिका, एस. एन. सिन्हा कॉलेज, जहानाबाद, बिहार।

[*]Corresponding Author: guddikumari2685@gmail.com

Citation: *कुमारी, गुड्डी एवं रानी, शोभा (2026). राजगीर में पर्यटन विकास के सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का अध्ययनः स्थानीय समुदायों के लिए अवसर एवं चुनौतियाँ. Journal of Commerce, Economics & Computer Science, 12(04), 80–88.*

सार

यह शोध–पत्र एक समीक्षात्मक अध्ययन है, जो प्रकाशित शोध–लेखों, शोध–प्रबंध, पुस्तकों और विभागीय आँकड़ों के प्रकाशित उद्धरणों की समीक्षा पर आधारित है। राजगीर में पर्यटन विकास के सामाजिक–आर्थिक प्रभावों को समझने के लिए पत्र पर्यटन–प्रभाव के स्थापित सिद्धांतों (मैथिसन एवं वॉल, 1982; बटलर, 1980; एप, 1992) को राजगीर और बिहार के बौद्ध परिपथ से जुड़े उपलब्ध अध्ययनों के साथ रखकर देखता है। तीन निष्कर्ष सामने आते हैं। पहला, राजगीर में पर्यटक–प्रवाह बड़ा है और बढ़ रहा है: विभागीय आँकड़ों के हवाले से जनवरी–नवंबर 2025 में लगभग 24.55 लाख पर्यटकों के आने की सूचना है, जो जनवरी–जून 2025 के विभागीय आँकड़ों से संगत है। सफारी के सरकारी प्रतिवेदन के अनुसार उससे 500 से अधिक परिवारों को प्रत्यक्ष आजीविका मिलती है। दूसरा, राजगीर पर सीधे साक्ष्य एक पर्यटक–सर्वेक्षण (रानी एवं अन्य, 2024) और जनवरी 2018 के एक निवासी–सर्वेक्षण (आलम, 2020) से मिलते हैं। आलम के अनुसार सर्वेक्षित निवासियों में लगभग 89% पर्यटकों की उपस्थिति के प्रति सकारात्मक थे और राजगीर में लगभग 56% निवासी पर्यटन–स्थलों के आसपास की गतिविधियों से जुड़े थे। तीसरा, तुलनात्मक अध्ययन (कॉक्स बाज़ार, बोधगया) लाभों के असमान वितरण, भूमि–मूल्य व किराये में वृद्धि और स्थानीय भागीदारी की सीमा जैसे जोखिम दिखाते हैं। राजगीर के लिए इनके प्रारंभिक संकेत मिलते हैं, और इन्हें परीक्षण–योग्य प्रस्थापनाओं के रूप में आगे प्राथमिक अध्ययन में परखा जाना चाहिए।

शब्दकोशः *राजगीर, पर्यटन विकास, सामाजिक–आर्थिक प्रभाव, स्थानीय समुदाय, बौद्ध परिपथ, समीक्षात्मक अध्ययन।*

प्रस्तावना

पर्यटन के प्रभावों को पारंपरिक रूप से तीन आयामों में देखा जाता हैः आर्थिक, भौतिक (पर्यावरणीय) और सामाजिक (मैथिसन एवं वॉल, 1982)। स्थानीय समुदाय की दृष्टि से यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि पर्यटन से होने वाला लाभ किसे मिलता है और उसकी कीमत कौन चुकाता है।

Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.

राजगीर इस प्रश्न के लिए उपयुक्त क्षेत्र है। यह हिंदू, जैन और बौद्ध परंपराओं से जुड़ा ऐतिहासिक नगर है, जो पाँच पहाड़ियों से घिरा है (रानी एवं अन्य, 2024)। हाल के वर्षों में यहाँ नेचर सफारी और काँच के पुल जैसे नए आकर्षण जुड़े हैं। केंद्रीय बजट 2024–25 के भाषण में राजगीर के "व्यापक विकास" की पहल की घोषणा भी हुई (पीटीआई, 2024)।

इस पत्र के तीन शोध–प्रश्न हैं:

- राजगीर में पर्यटक–प्रवाह और अवसंरचना में कैसा विस्तार दर्ज है?
- स्थानीय समुदायों के लिए किन आर्थिक–सामाजिक अवसरों के साक्ष्य उपलब्ध हैं?
- तुलनात्मक अध्ययनों से कौन–से जोखिम उभरते हैं, और राजगीर में उनके प्रत्यक्ष साक्ष्य कितने हैं?

पद्धति। यह अध्ययन प्रकाशित साहित्य और आँकड़ों की समीक्षा पर आधारित है। अक्टूबर 2026 में इंटरनेट पर साहित्य–खोज की गई और केवल वे स्रोत रखे गए जो (क) राजगीर, नालंदा या बिहार के बौद्ध परिपथ से जुड़े हैं, या (ख) स्थानीय समुदाय पर पर्यटन के प्रभाव का सिद्धांत या तुलनात्मक साक्ष्य देते हैं। हर संदर्भ का शीर्षक, लेखक, वर्ष और प्रकाशन–विवरण प्रकाशक, रिपॉज़िटरी या ग्रंथ–सूची सूचकांक के पृष्ठ से मिलाया गया है।

समाचार–स्रोतों का उपयोग केवल विभागीय या प्रशासनिक आँकड़ों और वक्तव्यों के प्रकाशित उद्धरण के रूप में हुआ है। उन्हें संदर्भ–सूची में अलग वर्ग में रखा गया है और पाठ में "रिपोर्ट के अनुसार" के रूप में लिखा गया है, क्योंकि उनकी गणना–पद्धति ज्ञात नहीं है।

सैद्धांतिक ढाँचा

पर्यटन के स्थानीय प्रभावों पर लिखे साहित्य में तीन ढाँचे बार–बार लौटते हैं। यह पत्र इन्हीं को राजगीर के साक्ष्य पढ़ने का आधार बनाता है।

तालिका 1: पर्यटन–प्रभाव के तीन सैद्धांतिक ढाँचे

ढाँचा	मूल स्रोत	मुख्य विचार	इस पत्र में उपयोग
प्रभावों के तीन आयाम	मैथिसन एवं वॉल (1982)	पर्यटन के प्रभाव आर्थिक, भौतिक और सामाजिक आयामों में बँटे होते हैं	हर साक्ष्य को इन तीन खानों में रखना
गंतव्य का जीवन-चक्र	बटलर (1980)	क्षेत्र अन्वेषण से सहभागिता, विकास, सुदृढ़ीकरण और ठहराव तक बढ़ता है; आगे गिरावट या पुनर्नवीकरण संभव है (बटलर, 2024)	राजगीर को किसी चरण में रखने के लिए आवश्यक आँकड़ों की पहचान
सामाजिक विनिमय	एप (1992)	निवासी लाभ और लागत की तुलना करके पर्यटन के प्रति रुख बनाते हैं	निवासियों की धारणा पर उपलब्ध अध्ययनों को पढ़ना

जीवन–चक्र मॉडल मुख्यतः एक साल में आने वाले पर्यटकों की संख्या पर टिका है और "वहन–क्षमता" को महत्व देता है (बटलर, 2024)। वहन–क्षमता का अर्थ है कि कोई स्थान बिना क्षति के कितने पर्यटक सँभाल सकता है। इसका सीधा परिणाम यह है कि राजगीर को किसी चरण में रखने के लिए कई वर्षों की एक सुसंगत पर्यटक–श्रृंखला चाहिए। इसलिए यह पत्र जीवन–चक्र के चरण का निर्धारण आगे के अध्ययन के लिए छोड़ता है।

सामाजिक विनिमय का तर्क यह है कि जो समूह पर्यटन से अपना लाभ लागत से अधिक देखते हैं, वे उसका समर्थन अधिक करते हैं (एप, 1992)। राज्य–स्तर के एक सर्वेक्षण में निवासियों ने पर्यटन के कई सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम एक साथ पहचाने (एंडेरेक एवं अन्य, 2005)। बौद्ध परिपथ के 175 निवासियों पर हुए अध्ययन में भी निवासी आर्थिक प्रभावों के प्रति सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभावों से अधिक

संवेदनशील पाए गए, और व्यक्तिगत लाभ मिलने पर समर्थन अधिक मिला (वेलिनोव एवं अन्य, 2024)। यह अध्ययन सुविधा–आधारित नमूने (जो उत्तरदाता आसानी से मिले, उन्हीं से) पर टिका है और इसमें अकेले राजगीर के निवासियों को अलग नहीं किया गया है, इसलिए इसे संकेत के रूप में लिया गया है।

राजगीरः पर्यटन का स्वरूप और हालिया प्रवृत्तियाँ

आकर्षण। राजगीर के पुराने आकर्षणों में वेणुवन, विश्व शांति स्तूप, गृध्रकूट, गर्म जल–कुंड, साइक्लोपियन दीवार और जैन मंदिर शामिल हैं (रानी एवं अन्य, 2024)। उसी अध्ययन में नए हरित आकर्षणों का भी वर्णन हैः घोड़ाकटोरा झील (जनवरी 2011 से जनता के लिए खुली), जू सफारी (लगभग 480 एकड़) और नेचर सफारी (लगभग 1,250 एकड़, जिसमें काँच का पुल है)। ये ब्योरे लेखकों ने समाचार–रिपोर्टों के हवाले से दिए हैं।

पर्यटक–संख्या। राजगीर की पर्यटक–संख्या के आँकड़े अलग–अलग रिपोर्टों में भिन्न हैं, इसलिए पहले उनका मिलान किया गया है।

तालिका 2: राजगीर की पर्यटक–संख्या के उपलब्ध आँकड़े

अवधि	आँकड़ा	स्रोत और टिप्पणी
जनवरी–नवंबर 2025	24,55,255 पर्यटक (घरेलू 23,37,383; विदेशी 1,17,872)	पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के आँकड़े; पटना प्रेस, 25 अगस्त 2026
"प्रति माह"	लगभग चार लाख पर्यटक	पर्यटन सूचना केंद्र के प्रभारी का कथन; पटना प्रेस, 14 सितंबर 2025
वर्ष के पहले छह माह	24 लाख से अधिक घरेलू और 57,000 विदेशी	उसी रिपोर्ट में; रिपोर्ट में भौगोलिक दायरा (राजगीर या पूरा ज़िला) स्पष्ट नहीं है
जनवरी–जून 2025	12 लाख से अधिक घरेलू; 70,499 विदेशी	पर्यटन विभाग के आँकड़े; पटना प्रेस, 2025ग
वर्ष 2024	लगभग 99,000 विदेशी (बिहार में दूसरा स्थान; बोधगया 1,12,000)	उसी रिपोर्ट में

पहली पंक्ति का औसत लगभग 2.2 लाख पर्यटक प्रति माह बैठता है। चौथी पंक्ति (जनवरीदृजून 2025ः 12 लाख से अधिक घरेलू, 70,499 विदेशी) इसके साथ संगत हैः छह माह में लगभग 12 लाख और ग्यारह माह में लगभग 23.4 लाख घरेलू पर्यटक लगभग समान मासिक औसत (करीब 2 लाख) देते हैं, और विदेशी पर्यटकों की संख्या भी (70,499 से 1,17,872) उसी दिशा में बढ़ती है। दो अलग रिपोर्टों में विभाग के आँकड़ों का आपस में मेल खाना इस आँकड़े को अधिक भरोसेमंद बनाता है, इसलिए पहली और चौथी पंक्ति को आधार माना गया है। दूसरी पंक्ति (चार लाख प्रति माह) और तीसरी पंक्ति (छह माह में 24 लाख) इनसे काफ़ी ऊँची हैं और संभवतः अलग दायरे (जैसे पूरा ज़िला) को दर्शाती हैं, इसलिए उन्हें तुलना के लिए दर्ज किया गया है। सुसंगत बहु–वर्षीय श्रृंखला पर्यटन विभाग से ली जा सकती है।

व्यापक संदर्भ। बिहार में कुल पर्यटक–आगमन 2019 में लगभग 3.51 करोड़ था, कोविड के कारण 2020 में घटकर लगभग 59.5 लाख और 2021 में लगभग 25 लाख रह गया, और 2022 में लगभग 2.54 करोड़ तक लौटा (कुमारी एवं कुमार, 2025, बिहार पर्यटन विभाग के आँकड़ों पर आधारित)। यह राज्य–स्तर की श्रृंखला है और उसमें राजगीर अलग से नहीं दिखता, यह श्रृंखला राज्य–स्तर की है और राजगीर को अलग नहीं दिखाती; यह संदर्भ देती है कि हाल के विस्तार का एक हिस्सा महामारी के बाद की वापसी है।

पर्यटकों का स्वरूप। राजगीर पर एकमात्र उपलब्ध पर्यटक–सर्वेक्षण 332 आगंतुकों पर है (सितंबर 2022 से फ़रवरी 2023; कई स्थलों पर यादृच्छिक क्लस्टर चयन)। इसके अनुसार 91.9% उत्तरदाता भारतीय थे, 68.1% ने स्वयं को पर्यटक और 31.9% ने तीर्थयात्री बताया। यात्रा का मुख्य उद्देश्य विश्राम व मनोरंजन (47.3%) रहा,

उसके बाद संस्कृति व विरासत (20.5%), पर्यावरण–पर्यटन क्षेत्र (16.9%) और धार्मिक कारण (15.4%) (रानी एवं अन्य, 2024)। यानी माँग तीर्थ से अधिक अवकाश–पर्यटन की है। यह स्थानीय आय के स्रोतों (होटल, परिवहन, हस्तशिल्प) के स्वरूप से जुड़ा बिंदु है, जिसे आगे परखा जा सकता है।

अवसंरचना और योजना। रिपोर्ट के अनुसार प्रशासन ने राजगीर और 15 किमी के दायरे के लिए सड़क–चौड़ीकरण, पार्किंग और नगर परिषद के विस्तार की योजना बनाई है, क्योंकि शहर में भीड़ बढ़ी है और बेहतर सड़कों व पार्किंग की ज़रूरत महसूस हो रही है (पटना प्रेस, 2025क)। जून 2026 में मुख्यमंत्री ने गया, राजगीर और नालंदा में अंतरराष्ट्रीय स्तर की पर्यटन सुविधाएँ विकसित करने के निर्देश दिए (यूएनआई, 2026)। ये प्रशासनिक वक्तव्य हैं; इनके सामाजिक–आर्थिक परिणामों का मूल्यांकन आगे के अध्ययन का विषय है।

स्थानीय समुदायों के लिए अवसर

अवसरों के साक्ष्य मुख्यतः विभागीय या प्रशासनिक रिपोर्टों और दो सर्वेक्षण–आधारित अध्ययनों से मिलते हैं। नीचे की तालिका हर साक्ष्य के साथ उसकी प्रकृति भी दर्ज करती है।

तालिका 3: अवसरों के साक्ष्य और उनकी स्थिति

अवसर	साक्ष्य	स्रोत	साक्ष्य की स्थिति
आजीविका के लिए पर्यटन पर निर्भरता	रिपोर्ट के अनुसार राजगीर की लगभग 75% आबादी आजीविका के लिए पर्यटन पर निर्भर बताई गई; होटल, धर्मशाला, ताँगा, ई-रिक्शा और छोटी दुकानें गिनाई गईं	पटना प्रेस, 2025क	प्रशासनिक आकलन
स्थानीय सेवा-क्षेत्र	गाइड, वाहन-संचालक, होटल, रेस्तराँ, हस्तशिल्प विक्रेता और स्थानीय उत्पादकों को लाभ मिलने की बात	पटना प्रेस, 2026	विभागीय वक्तव्य
सफारी से आजीविका (राजगीर)	सफारी के वार्षिक प्रतिवेदन के अनुसार 500 से अधिक परिवारों को प्रत्यक्ष आजीविका मिली; सफारी शुरू होने के बाद नए होटल और रेस्तराँ खुले; लगभग 107 कर्मियों का आयुष्मान भारत में पंजीकरण	राजगीर ज़ू सफारी, 2025	सरकारी प्रतिवेदन
निवासियों की भागीदारी और रुख (राजगीर-नालंदा)	सर्वेक्षित निवासियों में लगभग 89% पर्यटकों की उपस्थिति के प्रति सकारात्मक; लगभग 56% निवासी (राजगीर में) और 68% (नालंदा में) पर्यटन-स्थलों के आसपास की गतिविधियों में शामिल; 2012 के बाद महिलाओं की व्यावसायिक भागीदारी में लगभग 50% वृद्धि बताई गई	आलम (2020)	निवासी-सर्वेक्षण
होमस्टे और ग्रामीण पर्यटन	मुख्यमंत्री के निर्देश के अनुसार होमस्टे का विस्तार युवाओं के लिए आजीविका के नए अवसर बनाएगा; ग्रामीण पर्यटन से गाँवों की अर्थव्यवस्था मज़बूत होगी	यूएनआई, 2026	घोषित योजना
अवसंरचना	केंद्रीय बजट 2024-25 में राजगीर के व्यापक विकास की घोषणा; बौद्ध परिपथ की चार-लेन सड़कें अंतिम चरण में (उप-मुख्यमंत्री के अनुसार)	पीटीआई, 2024; पटना प्रेस, 2025ख	घोषणा और निर्माण-स्थिति के वक्तव्य
तुलनात्मक: बोधगया	तीर्थ और पर्यटन को नगर के विकास और अर्थव्यवस्था का प्रमुख चालक पाया गया	सर्सी (2012)	तुलनात्मक अध्ययन

एक संस्थान का प्रत्यक्ष आँकड़ा। राजगीर के लिए आजीविका की सबसे ठोस संख्या सरकारी प्रतिवेदन से मिलीः सफारी ने 2024–25 में लगभग 3,58,602 आगंतुकों का स्वागत किया (2023–24 में 3,77,036), और प्रतिवेदन के अनुसार 500 से अधिक परिवारों को प्रत्यक्ष आजीविका मिलती है (राजगीर ज़ू सफारी, 2025)। आगंतुक–संख्या में एक वर्ष में लगभग 4.9% की कमी आई है, जो दिखाता है कि सभी आकर्षणों में एक–सी वृद्धि नहीं हो रही। प्रतिवेदन यह नहीं बताता कि ये परिवार स्थानीय हैं या बाहर के और रोज़गार स्थायी है या अनुबंध का। इसलिए इसे एक सकारात्मक संकेत के रूप में लिया गया है।

निवासियों का सर्वेक्षण (आलम, 2020). आलम (2020) के अध्ययन में राजगीर के निवासियों से जनवरी 2018 में बातचीत का उल्लेख है (संदर्भ–सूची में 300 निवासियों का साक्षात्कार दर्ज है)। उसमें राजगीर–नालंदा क्षेत्र के निवासी मुख्यतः दुकानदारी और अन्य व्यावसायिक गतिविधियों से जुड़े पाए गए; पर्यटन का चरम मौसम दिसंबर से फ़रवरी बताया गया। अध्ययन के अनुसार कम आय वाले उत्तरदाताओं में लगभग 80% अनौपचारिक व्यावसायिक गतिविधियों में थे (पुरुष 50%, महिलाएँ 30%, बच्चे 20%)। यह संकेत देता है कि पर्यटन से आजीविका का एक बड़ा हिस्सा अनौपचारिक है, और उसमें बच्चों की उपस्थिति भी दर्ज है। इसे प्रारंभिक संकेत के रूप में लिया गया है; सीमाएँ खंड 6 में हैं।

आतिथ्य और विरासत। बौद्ध परिपथ के चार स्थलों (बोधगया, सारनाथ, वैशाली, कुशीनगर) पर 100 पर्यटकों के अध्ययन में, जिनका स्थानीय लोगों से सामना हुआ उनमें से 88% उनके व्यवहार से संतुष्ट थे (सिंह, 2016)। यह राजगीर का अध्ययन नहीं है, पर आतिथ्य की सामाजिक पूँजी का एक संकेत देता है। राजगीर पर उपलब्ध पर्यटक–सर्वेक्षण में "हरित अनुभव और विरासत" की मदों का औसत अंक 5–बिंदु पैमाने (1 = बहुत असंतुष्ट, 5 = बहुत संतुष्ट) पर 3.77 से 4.11 के बीच रहा (रानी एवं अन्य, 2024)। औसत अंक का अर्थ है सभी उत्तरदाताओं के अंकों का जोड़ भाग उत्तरदाताओं की संख्या। यानी पर्यटक राजगीर की विरासत को आकर्षण मानते हैं, यह आगंतुकों की राय है, जो विरासत के आकर्षण को दिखाती है।

इस खंड का निष्कर्षः अवसर स्पष्ट दिखते हैं, और निवासियों के एक सर्वेक्षण (आलम, 2020) में भी सकारात्मक रुख मिलता है। राजगीर के परिवारों की आय, रोज़गार की स्थिरता (मौसमी या पूरे वर्ष) और किन समूहों को ये अवसर मिल रहे हैं, इन पर प्राथमिक अध्ययन से स्पष्टता आएगी।

चुनौतियाँ और जोखिम

राजगीर में पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों के सीधे साक्ष्य सीमित हैं और मुख्यतः आलम (2020) के सर्वेक्षण से मिलते हैं। इसलिए चुनौतियों को यहाँ परीक्षण–योग्य प्रस्थापनाओं के रूप में रखा गया हैः तुलनात्मक अध्ययन बताते हैं कि ऐसे जोखिम अन्यत्र उभरे हैं, और तीसरे स्तंभ में दर्ज है कि राजगीर में उनके कितने प्रारंभिक संकेत मिले।

तालिका 4: चुनौतियाँ — तुलनात्मक साक्ष्य बनाम राजगीर में प्रत्यक्ष साक्ष्य

प्रस्थापना	तुलनात्मक साक्ष्य	राजगीर में प्रत्यक्ष साक्ष्य
लाभ का वितरण असमान हो सकता है	कॉक्स बाज़ार (बांग्लादेश) में अधिकांश पर्यटन-संपत्ति और अच्छे वेतन वाली नौकरियाँ बाहरी लोगों के पास पाई गईं, और कमाई का बाहर जाना (रिसाव) दर्ज हुआ (रहमान, 2022)। बोधगया में स्थानीय, राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय हितधारकों के बीच विकास की दिशा पर खींचतान दिखी (सर्सी, 2012)	प्रारंभिक संकेत: आलम (2020) के सर्वेक्षण में कम आय वाले उत्तरदाताओं में लगभग 80% अनौपचारिक गतिविधियों में थे; रिसाव, मौसमीपन और पर्यटन पर अति-निर्भरता को लागत के रूप में गिनाया गया है। राजगीर के पर्यटक-सर्वेक्षण में निवासी शामिल नहीं थे (रानी एवं अन्य, 2024)
भूमि-मूल्य, किराया और आवश्यक वस्तुओं की क़ीमतें बढ़ सकती हैं	कॉक्स बाज़ार में भूमि-मूल्य व किराये में वृद्धि, ज़रूरी वस्तुओं के दाम बढ़ना और ग़रीबों का अपनी ज़मीन से विस्थापन दर्ज हुआ (रहमान, 2022)	प्रारंभिक संकेत: आलम के अनुसार ज़मीन, मकान और खाद्य-वस्तुओं के दाम पर्यटन के साथ बढ़े हैं और ऊँचे भूमि-मूल्य से अप्रत्यक्ष लाभ भी हुआ, भूमिधारकों और भूमिहीनों पर असर अलग-अलग हो सकता है, जिसे परखा जाना है
स्थानीय भागीदारी सीमित रह सकती है	कॉक्स बाज़ार में स्थानीय समुदाय नीति-निर्माण से लगभग बाहर पाया गया (रहमान, 2022)। बोधगया में सरकारी दूरदर्शिता के अभाव में समान और टिकाऊ विकास की पहल एनजीओ ने सँभाली (सर्सी, 2012)	प्रारंभिक संकेत: विभाग का कहना है कि वह स्थानीय समुदायों को शामिल करना चाहता है (पटना प्रेस, 2026)। भागीदारी की ठोस व्यवस्था आगे परखी जानी है

भीड़, स्वच्छता और सेवा-गुणवत्ता पर दबाव	बोधगया में अनियंत्रित वृद्धि और टुकड़ों में हुए विकास ने दो दशकों में ग्रामीण भू-दृश्य बदल दिया (गीरी एवं मेसन, 2016)। बौद्ध परिपथ के पर्यटकों में से केवल 43% स्वच्छता से संतुष्ट थे (सिंह, 2016)	प्रारंभिक संकेत: रिपोर्ट के अनुसार शहर में भीड़ बढ़ी है और सड़क व पार्किंग की कमी है (पटना प्रेस, 2025क)। पर्यटकों ने सुरक्षा और उद्यान-गुणवत्ता की आठ में से पाँच मदों को 5 में से 2.60 से 2.98 अंक दिए (रानी एवं अन्य, 2024)
सांस्कृतिक मौलिकता का क्षरण	कॉक्स बाज़ार में स्थानीय संस्कृति की मौलिकता घटने और निवासियों के पर्यटकों की नक़ल करने की बात दर्ज हुई (रहमान, 2022)	प्रारंभिक संकेत: आलम के सर्वेक्षण में लगभग 35% पर्यटकों ने माना कि स्थानीय पर्यटकों से धार्मिक अनुष्ठानों में व्यवधान हुआ। यह पर्यटकों के अनुभव का माप है; निवासियों की संस्कृति पर प्रभाव आगे परखा जाना है

किसी मद का औसत अंक 3 से नीचे होना असंतोष की ओर झुकाव दिखाता है, क्योंकि पैमाने का बीच का मान 3 है।

तुलनात्मक साक्ष्य का उपयोग। कॉक्स बाज़ार एक तटीय बांग्लादेशी गंतव्य है और बोधगया का अध्ययन एक एम.ए. शोध–प्रबंध है जो अंतरराष्ट्रीय तीर्थयात्रियों पर केंद्रित है। इनके निष्कर्ष राजगीर पर सीधे लागू नहीं होते; इनका उपयोग प्राथमिक अध्ययन के प्रश्न तय करने के लिए है। इस समीक्षा से कहा जा सकता है कि राजगीर में भीड़ और सेवाओं पर दबाव के संकेत हैं, और भूमि–मूल्य, अनौपचारिक आजीविका तथा धार्मिक अनुष्ठानों में व्यवधान के प्रारंभिक संकेत आलम (2020) के सर्वेक्षण में हैं। इन्हें प्रस्थापनाओं के रूप में आगे परखा जाएगा।

शोध–अंतराल और अध्ययन की सीमाएँ

शोध–अंतराल।

राजगीर के प्रकाशित पर्यटक–सर्वेक्षण में स्थानीय निवासी और होटल या परिवहन से जुड़े हितधारक शामिल नहीं हैं; लेखक स्वयं इसे आगे के अध्ययन का क्षेत्र बताते हैं (रानी एवं अन्य, 2024)। निवासियों का प्रत्यक्ष सर्वेक्षण (आलम, 2020; क्षेत्र–कार्य 2018) नमूना–पद्धति और सारणियों का ब्योरा नहीं देता, इसलिए उसके निष्कर्ष प्रारंभिक संकेत के रूप में लिए गए हैं और उन्हें दोहराकर परखना उपयोगी होगा।

बौद्ध परिपथ के निवासियों पर उपलब्ध अध्ययन पूरे परिपथ का है और राजगीर को अलग नहीं दिखाता (वेलिनोव एवं अन्य, 2024)।

पर्यटक–संख्या की सुसंगत बहु–वर्षीय श्रृंखला उपलब्ध होने पर जीवन–चक्र के चरण का निर्धारण संभव होगा।

परिवार–स्तर की आय, रोज़गार की स्थिरता, भूमि–मूल्य और जीवन–यापन की लागत पर स्वतंत्र रूप से मापे गए आँकड़े आगे जुटाने होंगे। निकटतम आँकड़ा सफारी के अपने प्रतिवेदन में है (500 से अधिक परिवार)।

बिहार के पर्यटन–रुझान पर उपलब्ध अध्ययन राज्य–स्तर के हैं और राजगीर को अलग नहीं दिखाते (कुमारी एवं कुमार, 2025)।

इस समीक्षा की सीमाएँ।

- खोज इंटरनेट–आधारित थी। स्कोपस या वेब ऑफ़ साइंस जैसे डेटाबेस में व्यवस्थित खोज, हिंदी पत्रिकाओं और विश्वविद्यालय–शोध–प्रबंधों (जैसे शोधगंगा) की पूरी खोज नहीं हुई। इसलिए यहाँ दर्ज अंतराल उपलब्ध खोज के दायरे में हैं।
- पर्यटक–संख्या और स्थानीय आजीविका के आँकड़े विभागीय या प्रशासनिक रिपोर्टों पर आधारित हैं, जिनकी गणना–पद्धति प्रकाशित स्रोतों में विस्तार से नहीं दी गई है।
- तुलनात्मक साक्ष्य (कॉक्स बाज़ार, बोधगया) भिन्न संदर्भों के हैं।
- यह समीक्षा स्वयं एकत्र किए गए क्षेत्र–डेटा पर आधारित नहीं है। इसलिए यह किसी परिकल्पना को स्वीकार या अस्वीकार नहीं करती; वह प्राथमिक क्षेत्र–अध्ययन का कार्य है।

निष्कर्ष और नीतिगत सुझाव

निष्कर्ष।

- राजगीर में पर्यटन का विस्तार और नई अवसंरचना का निर्माण दर्ज है। विभागीय आँकड़े जनवरीदृ नवंबर 2025 में लगभग 24.55 लाख पर्यटकों की ओर इशारा करते हैं, और सुसंगत बहु–वर्षीय श्रृंखला बनने पर विस्तार की गति का सटीक माप संभव होगा।
- स्थानीय लोगों को आर्थिक लाभ मिलने के पक्ष में मिले साक्ष्य मुख्यतः प्रशासनिक वक्तव्य और एक निवासी–सर्वेक्षण (आलम, 2020) हैं, जिसमें लगभग 89% सर्वेक्षित निवासी पर्यटकों की उपस्थिति के प्रति सकारात्मक थे। परिवार–स्तर का मापा हुआ साक्ष्य आगे के प्राथमिक अध्ययन से मिलेगा।
- भीड़ और सेवाओं पर दबाव के संकेत राजगीर के स्रोतों में मौजूद हैं। लाभ का असमान वितरण, भूमि–मूल्य में वृद्धि और सांस्कृतिक परिवर्तन तुलनात्मक अध्ययनों से उभरे जोखिम हैं; राजगीर में आलम (2020) के सर्वेक्षण में इनके प्रारंभिक संकेत हैं (अनौपचारिक आजीविका, ऊँचे भूमि–मूल्य), जिन्हें आगे प्राथमिक अध्ययन में परखा जाएगा।

नीतिगत सुझाव। ये सुझाव ऊपर दर्ज साक्ष्य और अंतराल से निकले हैं।

आँकड़ों की एकरूपताः पर्यटन विभाग राजगीर के लिए घरेलू, विदेशी और रात्रि–प्रवास वाले पर्यटकों की मासिक श्रृंखला परिभाषा सहित प्रकाशित करे, और राजगीर तथा नालंदा ज़िले की संख्या अलग दिखाए।

भागीदारी को व्यवस्था बनानाः विभाग का स्थानीय समुदायों को शामिल करने का घोषित इरादा (पटना प्रेस, 2026) और होमस्टे व ग्रामीण पर्यटन की योजना (यूएनआई, 2026) तभी सार्थक होंगे जब स्थानीय गाइड, होमस्टे और हस्तशिल्प–उत्पादकों के लिए मापे जा सकने वाले संकेतक तय हों। बिहार और उत्तर प्रदेश के लिए अंतरराष्ट्रीय वित्त निगम के सहयोग वाली "ग़रीब–हितैषी पर्यटन" रणनीति का लक्ष्य यही बताया गया हैः ग़रीबों का शुद्ध लाभ बढ़ाना, विशेषकर महिलाओं और युवाओं के रोज़गार में (गीरी एवं मेसन, 2016)।

सेवाएँः स्वच्छता, पार्किंग, सुरक्षा और उद्यान–रखरखाव को प्राथमिकता दी जाए। राजगीर के पर्यटक–सर्वेक्षण में सुरक्षा व उद्यान–गुणवत्ता की अधिकांश मदें सबसे कम अंक पर रहीं (रानी एवं अन्य, 2024), और रिपोर्ट के अनुसार प्रशासन स्वयं भीड़ व पार्किंग की समस्या मानता है (पटना प्रेस, 2025क)।

निगरानी–संकेतकः भूमि–मूल्य, किराये और आवश्यक वस्तुओं की क़ीमतों पर नज़र रखी जाए, क्योंकि तुलनात्मक अध्ययन में ये जोखिम सबसे पहले उभरे (रहमान, 2022)।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आलम, टी. (2020, अक्टूबर). स्थानीय समुदायों पर पर्यटन का प्रभावः नालंदा, बिहार का एक अध्ययन (पृ. 193–218)- https%@@www-researchgate-net@publication@350525357
2. एंडेरेक, के., वैलेंटाइन, के., नॉफ़्फ़, आर., एवं वोग्ट, सी. (2005). समुदाय पर पर्यटन–प्रभावों के बारे में निवासियों की धारणाएँ. एनल्स ऑफ़ टूरिज़्म रिसर्च, 32(4), 1056–1076.
3. एप, जे. (1992). पर्यटन–प्रभावों के बारे में निवासियों की धारणाएँ. एनल्स ऑफ़ टूरिज़्म रिसर्च, 19(4), 665–690.
4. कुमारी, एस., एवं कुमार, पी. (2025). बिहार में पर्यटन के रुझान का विश्लेषणः अंगा मैदान का एक अनुभवजन्य अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 13(7). https%@@ijcrt-org@papers@IJCRT2507494-pdf
5. गीरी, डी., एवं मेसन, डी. (2016). बुद्ध की घाटी में यात्राः बिहार में बौद्ध पुनरुत्थान और पर्यटन–विकास. जर्नल ऑफ़ ग्लोबल बुद्धिज़्म, 17, 57–63. https%@@doi-org@10-5281@zenodo-1305866
6. बटलर, आर. डब्ल्यू. (1980). पर्यटन–क्षेत्र के विकास–चक्र की अवधारणाः संसाधन–प्रबंधन के लिए निहितार्थ. द कैनेडियन जियोग्राफ़र, 24, 5–12. https%@@doi-org@10-1111@j-1541&0064-1980-tb00970-Û
7. बटलर, आर. (2024). पर्यटन–गंतव्य का विकासः पर्यटन–क्षेत्र जीवन–चक्र मॉडल. टूरिज़्म जियोग्राफ़ीज़. https%@@strathprints-strath-ac-uk@88392@
8. मैथिसन, ए., एवं वॉल, जी. (1982). पर्यटनः आर्थिक, भौतिक और सामाजिक प्रभाव. लॉन्गमैन.
9. रहमान, एम. (2022). पर्यटन के सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का अन्वेषणः कॉक्स बाज़ार, बांग्लादेश का अध्ययन (शोध–प्रबंध, कार्डिफ़ मेट्रोपॉलिटन यूनिवर्सिटी). https%@@figshare-cardiffmet-ac-uk@…@21070138
10. रानी, डी., कुमार, एस., प्रसाद, ए., एवं धीरज, ए. (2024). राजगीर में पर्यटन की हरित पर्यटन के रूप में ब्रांडिंगः आगंतुकों की धारणाएँ. स्पोर्ट इ टुरिस्टिका. स्नोदकोवोएउरोपेयस्की चासोपिस्मो नाउकोवे, 7(2), 165–182. https%@@doi-org@10-16926@sit-2024-02-08
11. सर्सी, एस. (2012). बोधगया, बिहार, भारत में पर्यटन, तीर्थयात्रा और विकास (एम.ए. शोध–प्रबंध, ईस्ट कैरोलिना यूनिवर्सिटी). http%@@hdl-handle-net@10342@3908
12. सिंह, ए. (2016). बौद्ध परिपथ के गंतव्यों में पर्यटकों के अनुभव. आवाहनः ए जर्नल ऑन हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज़्म, 4(1). https%@@publishingindia-com@storage@PDFBrochures@3637-pdf
13. वेलिनोव, ई., धीरज, ए., कुमार, एस., एवं रानी, डी. (2024). भारत में बुद्ध के पदचिह्नों पर पर्यटन–विकास के प्रति निवासियों की धारणाएँ. जर्नल ऑफ़ ईस्टर्न यूरोपियन एंड सेंट्रल एशियन रिसर्च, 11(1). https%@@doi-org@10-15549@jeecar-v11i1-1465
14. पटना प्रेस. (2025क, 14 सितंबर). नालंदा के पर्यटन का कायाकल्पः 39 स्थलों का विकास होगा, स्थानीय लोगों को अधिक रोज़गार. https%@@patnapress-com@nalanda&tourism&39&sites&development@
15. पटना प्रेस. (2025ख, 12 मई). उप–मुख्यमंत्रीः बिहार के बौद्ध परिपथ की सड़कें वर्ष के अंत तक खुलेंगी, पर्यटन और रोज़गार को बढ़ावा. https%@@patnapress-com@bihars& buddhist& circuit&roads&to&open&by&year&end&boosting&tourism&and&jobs&says&deputy&cm@

16. पटना प्रेस. (2025ग, 10 अगस्त). राजगीर बना बिहार में विदेशी पर्यटकों का शीर्ष केंद्र, जंगल सफारी और कॉंच के पुल से बढ़ावा. https%@@patnapress-com@rajgir&foreign&tourists&jungle&safari&glass&bridge@

17. पटना प्रेस. (2026, 25 अगस्त). राजगीर की प्राकृतिक सुंदरता खींच रही पर्यटकः गर्म जल–कुंड, रोपवे और नेचर सफारी प्रमुख आकर्षण. https%@@patnapress-com@rajgir&tourism&hot&springs&ropeway&nature&safari@

18. पीटीआई. (2024, 23 जुलाई). बोधगया विष्णुपद मंदिर गलियारे विश्वस्तरीय पर्यटन–स्थल बनेंगे. ओनमनोरमा. https%@@www-onmanorama-com@…@union&budget&2024&25&bodh&gaya&vishnupad&temple&corridors&tourism&pilgrimage-html

19. यूनाइटेड न्यूज़ ऑफ़ इंडिया (यूएनआई). (2026, 14 जून). गया, राजगीर और नालंदा में अंतरराष्ट्रीय स्तर की पर्यटन सुविधाएँ विकसित होंगीः मुख्यमंत्री. https%@@test-uniindia-com@news@east@tourism&bihar&facilities@3876564-html

20. राजगीर जू सफारी. (2025). वार्षिक प्रतिवेदन 2024–25. पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, बिहार सरकार. https%@@cza-nic-in@uploads@documents@reports@english@ AR&rajgirzoo&2425-pdf

❑❑❑